नये व अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

- विचारों को कहना आसान होता है, परन्तु लिखना एक चुनौती है। इस का कारण है अधिकतर लोग लिखित रूप से अभिव्यक्ति का अभ्यास नहीं करते।
- लेखन का आशय भाषा के सहारे किसी चीज पर विचार करना और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप से अभिव्यक्त करना है।
- लेखन अलग-अलग विधा में किया जाता है, जैसे – निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत आदि।
- लेख लिखने का कोई फार्मूला नहीं होता यह लिखने वाले पर निर्भर करता है कि वह लेख किस प्रकार लिखना चाहता है।
- अच्छे लेखन के लिए आवश्यक है लेख का विवरण-विवेचन में सुसंबद्ध होने के साथ-साथ वो सुसंगत भी हो।
- सामान्यतः निबंधों या आलेखों में **मैं** शैली का प्रयोग नहीं होता, परंतु नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय **मैं** का उपयोग किया जा सकता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

उदाहरण

(।)

शनिवार की हाट

मेरे शहर में वैसे तो कई बाजार हैं और कई बड़े-बड़े शोरूम हैं, परंतु शनिवार लगने वाली हाट बहुत प्रसिद्ध है। ये हाट लगभग डेढ़-दो किलोमीटर के क्षेत्र में लगती है तथा हर तरह का सामान यहाँ मिलता है। हाट शुरू होती है कपड़ों की दुकानों से - बिना सिले कपड़े, सिले कपड़े, छोटे बच्चों के कपड़े तथा आधुनिक युवाओं के आधुनिक कपड़े, तरह-तरह की साड़ियाँ हैं तो चादरें व पर्दे भी हैं, अर्थात् हर किसी की जरूरत के लिए कपड़े हैं। कुछ साज-श्रृंगार की दुकानें हैं, तो कुछ जूते, चप्पल, पर्स, बेल्ट की दुकानें हैं।

यहाँ से कुछ आगे बढ़ने पर बर्तनों की दुकानें शुरू हो जाती हैं। छोटे-बड़े सभी तरह के बर्तन यहाँ मिलते हैं। फर्नीचर की दुकानें भी हैं, जहाँ प्लास्टिक की मेज-कुर्सी है तो लकड़ी के सोफे-पलंग भी बिक रहे हैं। सड़क के किनारे सिलाई मशीन भी बिक रही है, तो तरह-तरह का बिजली का सामान भी बिक रहा है।

कुछ आगे चलने पर अनाज, मसाले, सूखे मेवे बिक रहे हैं, वहीं घर की साफ-सफाई का सामान भी उपलब्ध है। हाट बाजार में सब्जी, फल भी बिक रहे हैं। अर्थात् कह सकते हैं जरूरत का हर सामान इस हाट बाजार में उपलब्ध है।

आज शाम चार बजे से रात लगभग दस बजे तक लगता है। शाम से ही हाट में भीड़ बढ़नी शुरू हो जाती है, बच्चे-बूढ़े-जवान सभी लोग होते हैं। हाट में इतनी भीड़ होती है कि कंधे से कंधे टकराते हुए ही आगे बढ़ सकते हैं। इस भीड़ का मुख्य कारण है - भारत के आमजन न तो बड़े-बड़े मॉल में जाकर खरीदारी कर सकते हैं और न बड़े-बड़े शोरूम और ऊँची दुकानों पर जा सकते हैं।

इसलिए लोग पूरे सप्ताह इंतजार करते हैं हाट के दिन का। अपना साप्ताहिक सामान तो खरीदते ही हैं, तीज-त्यौहार का सामान और घर के उत्सवों का सामान भी यहीं से खरीदते हैं। भारतीय संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है यह हाट बाजार।

(II)

आत्मनिर्भर भारत

अक्सर लोग अपने घर का सामान दिखाते हैं और बड़े गर्व से कहते हैं - ये शो-पीस हम फ़्राँस से लाए थे, ये खूबसूरत कालीन हम ईरान से लाए थे, ये जापानी है और वो इटली का। यहाँ तक कि रोज काम आने वाला सामान हम चीन का खरीदते हैं और गर्व से कहते हैं "चाइनीज है। सस्ता है, थोड़े दिन बाद इसे बदल कर नया ले लेंगे, नई डिजाइन, नई फैशन का।"

पिछले कुछ दशकों से चीन ने विश्व-बाज़ार पर कब्ज़ा कर लिया है। भारत भी इससे अछूता नहीं। खिलौने हो या कपड़े, दवाइयाँ हो, सजावट का सामान हो, यहाँ तक कि दीपावली की लड़ियाँ और होली की पिचकारी भी चाइना की ही बनी होती है। इससे हमारा बहुत-सा पैसा चाइना चला जाता है, अपने देश के उद्योग-धंधे पनप ही नहीं पाते।

इन बातों पर ध्यान देने के बाद हमारे प्रधानमंत्री ने नारा दिया – "आत्मनिर्भर भारत"। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए करोड़ों रुपए की अर्थनीति की घोषणा की गई है। इसमें कृषि उद्योग, अति लघु उद्योग, लघु और बड़े उद्योगों के विकास के लिए बहुत धन आवंटित किया गया है। केवल इतना ही नहीं, देश की सुरक्षा के क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर बने, इसके लिए भी अत्यधिक प्रयास किए जा रहे हैं।

आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारे देश के लोग पूरा सहयोग दे रहे हैं, अपने देश में बना सामान खरीद रहे हैं, विदेशी सामान के लिए नहीं कहते हैं। वह दिन शीघ्र आएगा, जब हम आत्मनिर्भर बनकर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करेंगे और विश्व के अग्रणी देश बन जाएँगे।

VASUNDHARAHINDI.COM

(III)

मेरा चुनाव प्रचार का एक दिन

मेरे राज्य के विधानसभा चुनाव थे। मेरे घर के पास ही एक पार्टी का मुख्य कार्यालय था। सारा दिन वहाँ भीड़ रहती थी। कई पार्टी कार्यकर्ता वहाँ रहते। कई बार चाय-नाश्ते का दौर चलता तथा समय पर दोपहर व रात का खाना कहीं से बनकर आता। ऐसे लगता कुछ तो वास्तव में पार्टी विशेष से जुड़े हैं, परंतु अधिकतर निठल्ले, अवसरवादी हैं, जो कुछ दिन के लिए मुफ्त के खाने पीने का आनंद ले रहे हैं।

एक दिन विधानसभा की सीट पर जो प्रतिनिधि खड़े हुए थे, वो घर-घर जाकर प्रचार करने वाले थे और शाम को रामलीला मैदान में उनकी जनसभा थी। गली वालों को साथ चलने के लिए कहा गया। गली के कुछ लोगों के साथ मैं भी उत्सुकतावश चल पड़ा।

कार्यकर्ता पार्टी के झंडे-बैनर लेकर चल रहे थे, घर-घर जाकर घर के मुखिया से मिल रहे थे। नेताजी सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर, टोपी लगाकर हाथ जोड़कर निवेदन कर रहे थे। घर-घर जाकर वो लोग कह रहे थे कि वोट हमें देना। हम क्षेत्र के विकास के लिए काम करेंगे, अपना वादा पूरा करेंगे। हमारे नेता जी को आप जब याद करेंगे, उन्हें अपने द्वार पर पाएँगे। इस तरह सारा दिन निकल गया।

शाम को रामलीला मैदान में जनसभा थी। लाखों लोग वहाँ एकत्रित हुए थे। बसों में भर-भर के लोग आए थे। नेता जी ने अपना उद्बोधन दिया और बढ़-चढ़कर अपने वायदों को दोहराया। थक-हारकर शाम को मैं घर वापस आया। मुझे इंतजार है कौन सी पार्टी सत्ता में आती है और उनके प्रतिनिधि जनता को किये गए वायदे पूरे करते हैं या नहीं।

VASUNDHARAHINDI.COM

(। V)

भीड़ से भरा गाड़ी का डिब्बा

आज अधिकतर लोग जब यात्रा करते हैं, तो पहले से ही अपनी सीट रिजर्व करवा लेते हैं। परंतु जीवन में कभी न कभी बिना रिजर्वेशन के भी यात्रा करनी पड़ती है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैं उदयपुर में पढ़ रही थी। अचानक कॉलेज बंद हो गए, शहर में दंगे होने की संभावना थी। मेरे घर वालों ने कहा - उदयपुर रुकने की जरूरत नहीं। अभी चलो और रात तक घर पहुँच जाओ।

मैं स्टेशन पर पहुँची। गाड़ी उदयपुर से ही चलनी थी और वो प्लेटफार्म पर ही खड़ी थी। मैं जल्दी पहुँच गई थी, इसलिए गाड़ी का डिब्बा अभी खाली था। मैं खुश हो गई और जल्दी से खिड़की के पास वाली सीट पर बैठ गई। धीरे-धीरे डिब्बे में भीड़ बढ़ने लगी। एक सीट, जिस पर तीन चार लोग बैठते थे, उस पर आठ लोग बैठे थे। यहाँ तक कि सामान रखने के लिए जो सीट थी, उस पर भी लोग बैठे थे। डिब्बा ठसाठस भर गया था। मुझे लग रहा था कब गाड़ी चलेगी। आखिर गाड़ी चली और मैंने चैन की साँस ली।

गाड़ी पैसेंजर गाड़ी थी। लगभग हर स्टेशन पर रुक रही थी। जैसे ही गाड़ी रूकती, कई सारे लोग डिब्बे में चढ़ जाते। अब सीटों पर बैठने की जगह नहीं थी। लोग जमीन पर ही बैठने लगे थे। डिब्बे में पूरी चिल्ल-पों थी। कहीं छोटा बच्चा गर्मी से रो रहा है, तो कहीं कुछ मित्र अपनी ही मस्ती में मस्त थे। एक युवक खड़ा था, सामान की गठरी उसने अपने सिर पर ही रखी हुई थी, क्योंकि सामान रखने की जगह ही नहीं थी। मैंने खिड़की से बाहर देखा। डिब्बे के दरवाजे पर भी लोग बैठे थे बाहर पैर लटका कर, उन्हें इस तरह बैठे देख कर मुझे बहुत डर लगा।

एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी। कुछ यात्रियों को उतरना था। बहुत कठिनाई से वो गाड़ी से उतरे। उतरने वाले पाँच-छः लोग थे और गाड़ी पर चढ़ने वाले यात्री दस थे। भीड़ इतनी थी कि गाड़ी के रुकते ही गर्मी से बुरा हाल हो जाता और गाड़ी के चलने पर राहत मिलती। इस प्रकार इस अनोखे अनुभव को लेते हुए रात दस बजे मेरी गाड़ी उस स्टेशन पर पहुँची, जहाँ मुझे उतरना था। बड़ी मुश्किल से मैं गाड़ी से उतरी और मैंने जाना कि यात्रा ऐसे भी की जाती है।

(V)

जातिवाद का जहर

जहर मानव शरीर के लिए बहुत घातक है। मानव समाज के लिए जातिवाद जहर से कम नहीं। हमारे पूर्वजों ने कर्म को आधार मानकर पर वर्ण तय किए थे। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि एक समय ऐसा आएगा जब बच्चे की जाति जन्म के साथ ही निर्धारित हो जाएगी। जातिवाद का जो बीज वो बो रहे हैं, एक दिन वो विष वृक्ष बन जाएगा, जो आगे चलकर हजारों सालों तक गैर-बराबरी और शोषण-उत्पीड़न का आधार बनकर समाज की तंदुरुस्ती का क्षय करता रहेगा। आज हम औद्योगिक संयंत्रों, तीव्र गति वाले परिवहन-साधनों, स्वचालित उपकरणों, कंप्यूटर और इंटरनेट के युग में जी रहे हैं, पर जन्म के आधार पर कुछ लोगों को अपना और कुछ को पराया मानने, कुछ को बड़ा और कुछ को क्षुद्र मानने की सदियों पुरानी परिपाटी अब भी कायम है।

आए दिन अखबारों में इस तरह की खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि फलाँ गाँव या कस्बे में किसी प्रेमी युगल को इसलिए मार डाला गया क्योंकि उन्होंने अलग-अलग जातियों से आने के बावजूद साथ में जीवन जीने का सपना देखा था। ऐसी खबरें बार-बार दोहराई जाती हैं कि किसी गाँव में एक जाति विशेष के टोले पर दूसरी जाति के लोगों ने हमला कर दिया और महिलाओं-बच्चों सहित बड़ी संख्या में लोग मारे गए। जातिवाद का तनाव हमारे प्रतिदिन के जीवन का हिस्सा बन गया है।

सामान्य रूप से माना जाता है कि आधुनिक लोकतंत्र जातिवाद की परिपाटी को मिटा डालेगा, पर हमारे यहाँ तो मंजर ही अलग है। लोकतांत्रिक चुनावों ने जातिवाद के भावों को और अधिक भड़काया है। अलग-अलग पार्टियाँ जाति के आधार पर वोट माँगती हैं, जातिवाद उनका वोट बैंक है। ऐसे में प्रत्येक उम्मीदवार जाति के आधार पर वोट बटोरने की कोशिश करता है। जब राजनीति जातिवाद के आधार पर चलती है तो गली-मोहल्ले, हमारे कार्य के स्थान, हमारी शिक्षण संस्थाएँ इस जातिवाद के जहर से कैसे बच सकते हैं। जैसे जहर हमारे रक्त में घुलकर हमारे अंग-प्रत्यंग को प्रभावित करता है, वैसे ही जातिवाद के जहर ने समाज के प्रत्येक अंग को प्रभावित किया है।

पर समाज में जीवन की ओर बढ़ने की ललक अद्भुत है। वह इस जातिवाद के जहर को अवश्य परास्त करेगा। एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा। जातिवाद का लाभ उठाने वाले लोग कुछ ही हैं और जातिवाद से प्रभावित होने वाले अनेक। अगर ये सब इकट्ठे हो जाएँ, तो जातिवाद के समर्थक इनके सामने टिक ही नहीं पाएँगे। हमें आशा है ऐसा शीघ्र ही होगा।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM